" ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ ।
अपना तन शीतल करै, औरन को सुख होइ ।

प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इस साखी के कवी कबीरदास जी है। इसमें कबीर ने मीठी बोली बोलने और दूसरो को दुःख न देने की बात कही है।

इसमें कबीरदास जी कहते है कि हमें अपने मन का अहंकार त्याग कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसमें हमारा अपना तन मन भी शीतल रहे और दुसरों को भी कोई कष्ट न हो अर्थात दूसरो को भी सुख प्राप्त हो।

"कस्तूरी कुंडली बसै। मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसै घटि-घटि राम हैं। दुनिया देखै नाहिं।"

प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इसके कवि कबीरदास जी है इसमें कबीर कहते हैं कि संसार के लोग कस्तुरी हिरण की तरह हो गए हैं जिस तरह हिरण कस्तुरी प्राप्ति के लिए इधर उधर भटकता रहता है उसी तरह लोग भी ईश्वर प्राप्ति के लिए भटक रहे हैं।

कबीरदास जी कहते है कि जिस प्रकार एक हिरण कस्तुरी की खुशबु को जंगल में ढूंढता फिरता है जबकि वह सुगंध उसी की नाभि में विद्यमान होती है परन्तु वह इस बात से बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण कण में ईश्वर विद्मान है और मनुष्य इस बात से बेखबर ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढूंढता है। कबीर जी कहते है कि अगर ईश्वर को ढूंढना ही है तो अपने मन में ढूंढों।

" जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नांहि ।
सब अँधियारा मिटी गया, जब दीपक देख्या मांहि

प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी है। इसमें कबीर जी मन में अहम् या अहंकार के मिट जाने के बाद मन में परमेश्वर के वास की बात कहते है।

कबीर जी कहते है कि जब इस हृदय में 'मैं' अर्थात मेरा अहंकार था तब इसमें परमेश्वर का वास नहीं था। परन्तु अब हृदय में अहंकार नहीं है तो इसमें प्रभु का वास है। जब परमेश्वर रूपक दीपक के दर्शन हुए तो अज्ञान रूपी अहंकार का विनाश हो गया।